

(सुभाषित-त्रिवेणी)

गीतामें तपके तीन प्रकार

[Three Types of Tapa (Austerity) in Gita]

❖ **शरीर-सम्बन्धी तप** (*Austerity of Body*)—

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानीजनोंका पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा—यह शरीर-सम्बन्धी तप कहा जाता है।

Worship of Gods, the Brāhmaṇas, one's gurus, elders and wise-men, purity, straightforwardness, continence and nonviolence—these are called penance of the body.

❖ **वाणी-सम्बन्धी तप** (*Austerity of Speech*)—

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

जो उद्वेग न करनेवाला, प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ भाषण है तथा जो वेद-शास्त्रोंके पठनका एवं परमेश्वरके नाम-जपका अभ्यास है—वही वाणी-सम्बन्धी तप कहा जाता है।

Words which cause no annoyance to others and are truthful, agreeable and beneficial, as well as the study of the Vedas and other Śāstras and the practice of the chanting of Divine Name—this is known as penance of speech.

❖ **मन-सम्बन्धी तप** (*Austerity of Mind*)—

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥

मनकी प्रसन्नता, शान्तभाव, भगवच्चिन्तन करनेका स्वभाव, मनका निग्रह और अन्तःकरणके भावोंकी भलीभाँति पवित्रता—इस प्रकार यह मनसम्बन्धी तप कहा जाता है।

Cheerfulness of mind, placidity, habit of contemplation on God. Control of the mind and perfect purity of inner feelings—all this is called austerity of the mind.

[श्रीमद्भगवद्गीता १७।१४-१६]

गीतामें तपकी तीन श्रेणियाँ

[Three Class of Tapa (Austerity) in Gita]

❖ **सात्त्विक-तप** (*Sāttvika Austerity*)—

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।

अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते॥

फलको न चाहनेवाले योगी पुरुषोंद्वारा परम श्रद्धासे किये हुए उस पूर्वोक्त तीन प्रकारके तपको सात्त्विक कहते हैं।

This threefold penance performed with supreme faith by Yogīs expecting no return is called Sāttvika.

❖ **राजस-तप** (*Rājasika Austerity*)—

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।

क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्॥

जो तप सत्कार, मान और पूजाके लिये तथा अन्य किसी स्वार्थके लिये भी स्वभावसे या पाखण्डसे किया जाता है, वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहा गया है।

The austerity which is performed for the sake of renown, honour or adoration, as well as for any other selfish gain, either in all sincerity or by way of ostentation, and yields an uncertain and momentary fruit, has been spoken of here as Rājasika.

❖ **तामस-तप** (*Tāmasika Austerity*)—

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।

परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो तप मूढ़तापूर्वक हठसे, मन, वाणी और शरीरकी पीड़ाके सहित अथवा दूसरेका अनिष्ट करनेके लिये किया जाता है—वह तप तामस कहा गया है।

Penance which is resorted to out of foolish notion and is accompanied by self-mortification, or is intended to harm others, such penance has been declared as Tāmasika.

[श्रीमद्भगवद्गीता १७।१७-१९]



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING

सुभाषित-त्रिवेणी

गीतामें दानके तीन प्रकार

[Three Types of Gift in Gita]

❖ सात्त्विक दान (Sāttvika Gift)—

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥

दान देना ही कर्तव्य है—ऐसे भावसे जो दान देश तथा काल और पात्रके प्राप्त होनेपर उपकार न करनेवालेके प्रति दिया जाता है, वह दान सात्त्विक कहा गया है।

A gift which is bestowed with a sense of duty on one from whom no return is expected, at appropriate time and place, and to a deserving person, that gift has been declared as Sāttvika.

❖ राजस दान (Rājasika Gift)—

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्॥

किंतु जो दान क्लेशपूर्वक तथा प्रत्युपकारके प्रयोजनसे अथवा फलको दृष्टिमें रखकर फिर दिया जाता है, वह दान राजस कहा गया है।

A gift which is bestowed in a grudging spirit and with the object of getting a service in return or in the hope of obtaining a reward, is called Rājasika.

❖ तामस दान (Tāmasika Gift)—

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।

असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥

जो दान बिना सत्कारके अथवा तिरस्कारपूर्वक अयोग्य देश-कालमें और कुपात्रके प्रति दिया जाता है, वह दान तामस कहा गया है।

A gift which is made without good grace and in a disdainful spirit out of time and place and to undeserving persons, is said to be Tāmasika.

गीतामें त्यागके तीन प्रकार

[Three types of Renunciation in Gita]

❖ सात्त्विक त्याग (Sāttvika Renunciation)—

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।

सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः॥

हे अर्जुन! जो शास्त्रविहित कर्म करना कर्तव्य है—इसी भावसे आसक्ति और फलका त्याग करके किया जाता है—वही सात्त्विक त्याग माना गया है।

A prescribed duty which is performed simply because it has to be performed, giving up attachment and fruit, that alone has been recognized as the Sāttvika form of Renunciation.

❖ राजस त्याग (Rājasika Renunciation)—

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।

स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्॥

जो कुछ कर्म है, वह सब दुःखरूप ही है—ऐसा समझकर यदि कोई शारीरिक क्लेशके भयसे कर्तव्य-कर्मका त्याग कर दे, तो वह ऐसा राजस त्याग करके त्यागके फलको किसी प्रकार भी नहीं पाता।

Should anyone give up his duties for fear of physical strain, thinking that all actions are verily painful-practising such Rājasika form of Renunciation, he does not reap the fruit of Renunciation.

❖ तामस त्याग (Tāmasika Renunciation)—

नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते।

मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः॥

(निषिद्ध और काम्य कर्मोंका तो स्वरूपसे त्याग करना उचित ही है) परंतु नियत कर्मका स्वरूपसे त्याग करना उचित नहीं है। इसलिये मोहके कारण उसका त्याग कर देना तामस त्याग कहा गया है।

(Prohibited acts and those that are motivated by desire should no doubt be given up). But it is not advisable to abandon a prescribed duty. Such abandonment through ignorance has been de-

(सुभाषित-त्रिवेणी)

गीतामें भोजनके तीन प्रकार

[Three Types of Food in Gita]

❖ सात्त्विक आहार (Sāttvika Food)—

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।

रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥

आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीतिको बढ़ानेवाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहनेवाले तथा स्वभावसे ही मनको प्रिय—ऐसे आहार अर्थात् भोजन करनेके पदार्थ सात्त्विक पुरुषको प्रिय होते हैं।

Foods which promote longevity, intelligence, vigour, health, happiness and cheerfulness, and which are juicy, succulent, substantial and naturally agreeable, are liked by men of Sāttvika nature.

❖ राजस आहार (Rājasika Food)—

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।

आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥

कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, बहुत गरम, तीखे, रूखे, दाहकारक और दुःख, चिन्ता तथा रोगोंको उत्पन्न करनेवाले आहार अर्थात् भोजन करनेके पदार्थ राजस पुरुषको प्रिय होते हैं।

Foods which are bitter, sour, salty, overhot, pungent, dry and burning, and which cause suffering, grief and sickness, are dear to the Rājasika.

❖ तामस आहार (Tāmasika Food)—

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।

उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥

जो भोजन अधपका, रसरहित, दुर्गन्धयुक्त, बासी और उच्छिष्ट है तथा जो अपवित्र भी है, वह भोजन तामस पुरुषको प्रिय होता है।

Food which is ill-cooked or not fully ripe, insipid, putrid, stale and polluted, and which is impure too, is dear to men of Tāmasika disposition.

[श्रीमद्भगवद्गीता १७।८—१०]

गीतामें यज्ञके तीन प्रकार

[Three types of Sacrifice in Gita]

❖ सात्त्विक यज्ञ (Sāttvika Sacrifice)—

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।

यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥

जो शास्त्रविधिसे नियत, यज्ञ करना ही कर्तव्य है—इस प्रकार मनको समाधान करके, फल न चाहनेवाले पुरुषोंद्वारा किया जाता है, वह सात्त्विक है।

The sacrifice which is offered, as ordained by scriptural injunctions, by men who expect no return and who believe that such sacrifices must be performed, is Sāttvika in character.

❖ राजस यज्ञ (Rājasika Sacrifice)—

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।

इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥

परंतु हे अर्जुन! केवल दम्भाचरणके लिये अथवा फलको भी दृष्टिमें रखकर जो यज्ञ किया जाता है, उस यज्ञको तू राजस जान।

That sacrifice, however, which is offered for the sake of mere show or even with an eye to its fruit, know it to be Rājasika, Arjuna.

❖ तामस यज्ञ (Tāmasika Sacrifice)—

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।

श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥

शास्त्रविधिसे हीन, अन्नदानसे रहित, बिना मन्त्रोंके, बिना दक्षिणाके और बिना श्रद्धाके किये जानेवाले यज्ञको तामस यज्ञ कहते हैं।

A sacrifice, which is not in conformity with scriptural injunctions, in which no food is offered, and no sacrificial fees are paid, which is without sacred chant of hymns and devoid of faith, is said to be Tāmasika.

[श्रीमद्भगवद्गीता १७।११—१३]



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING

(सुभाषित-त्रिवेणी)

गीतामें ज्ञानके तीन प्रकार

[Three Types of Knowledge in Gita]

❖ **सात्त्विक ज्ञान** (Sāttvika Knowledge)—

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।

अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥

जिस ज्ञानसे मनुष्य पृथक्-पृथक् सब भूतोंमें एक अविनाशी परमात्मभावको विभागरहित समभावसे स्थित देखता है, उस ज्ञानको तो तू सात्त्विक जान ।

That by which man perceives one imperishable divine existence as undivided and equally present in all individual beings, know that knowledge to be Sāttvika.

❖ **राजस ज्ञान** (Rājasika Knowledge)—

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्मृथग्विधान् ।

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥

किंतु जो ज्ञान अर्थात् जिस ज्ञानके द्वारा मनुष्य सम्पूर्ण भूतोंमें भिन्न-भिन्न प्रकारके नाना भावोंको अलग-अलग जानता है, उस ज्ञानको तू राजस जान ।

The knowledge by which man cognizes many existences of various kinds, as apart from one another, in all beings, know that knowledge to be Rājasika.

❖ **तामस ज्ञान** (Tāmasika Knowledge)—

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहेतुकम् ।

अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥

परंतु जो ज्ञान एक कार्यरूप शरीरमें ही सम्पूर्णके सदृश आसक्त है तथा जो बिना युक्तिवाला, तात्त्विक अर्थसे रहित और तुच्छ है—वह तामस कहा गया है ।

Again, that knowledge which clings to one body as if it were the whole, and which is irrational, has no real grasp of truth and is trivial, has been declared as Tāmasika.

[श्रीमद्भगवद्गीता १८।२०-२२]

गीतामें कर्मके तीन प्रकार

[Three types of Action in Gita]

❖ **सात्त्विक कर्म** (Sāttvika Action)—

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।

अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥

जो कर्म शास्त्रविधिसे नियत किया हुआ और कर्तापनके अभिमानसे रहित हो तथा फल न चाहनेवाले पुरुषद्वारा बिना राग-द्वेषके किया गया हो—वह सात्त्विक कहा जाता है ।

That action which is ordained by the scriptures and is not accompanied by the sense of doership, and has been done without any attachment or aversion by one who seeks no return, is called Sāttvika.

❖ **राजस कर्म** (Rājasika Action)—

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्गारेण वा पुनः ।

क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥

परंतु जो कर्म बहुत परिश्रमसे युक्त होता है तथा भोगोंको चाहनेवाले पुरुषद्वारा या अहंकारयुक्त पुरुषद्वारा किया जाता है, वह कर्म राजस कहा गया है ।

That action however, which involves much strain and is performed by one who seeks enjoyments or by a man full of egotism, has been spoken of as Rājasika.

❖ **तामस कर्म** (Tāmasika Action)—

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।

मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥

जो कर्म परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्यको न विचारकर केवल अज्ञानसे आरम्भ किया जाता है, वह तामस कहा जाता है ।

That action which is undertaken through sheer ignorance, without regard to consequences or loss to oneself, injury to others and one's own resourcefulness, is declared as Tāmasika.

[श्रीमद्भगवद्गीता १८।२३-२५]